लोक कला - भोपा भोपी

Duration : 02.44 Transcribed words : 395

- गाना / संगीत -

00.17 रवि कान्त शर्मा : ये लोग नायब भोपाज हैं... जो राज, राजे महाराजाओं के जो समय चल रहे थे... तो उसमें सेना नायक होते थे ये... सेनापति होते थे... लडाकू होते थे...

- गाना / संगीत -

00.36 रवि कान्त शर्मा : पर भारत आजाद होने के बाद क्या करें... वो राजे भी गये, महाराजे भी गये, दरबार भी गये...

00.42 रामपाल भोपा : एक दो वा में बचे, एक दो हमारे मूँ बचे... तो हमारे वाला लोग जा के किया कि अब भई वो, हम क्या करें... तो उसने बोला कि भई अब क्या तू मैं, तुझे क्या बताऊँ.. आप कोई ऐसा सिस्टम सोचो कि तुम्हारा बढ़ेरा क्या करता है और अब तुम्हारे को क्या करना है...

01.00 रवि कान्त शर्मा : आजीविका का इनको भी परेशानी आने लगी... क्या किया जाये, क्या ना किया जाये... तो धीरे धीरे बापूजी, राठौरगढ़ के देवता, जो, जिसको ये लोग, विशेष रूप से इस जाति के लोग मानते हैं, उनकी एक फंड निर्माण की गई और उन्हीं की कथा गायन, एक जो स्टोरी टैलिंग ट्रैडिशन ऑफ इंडिया है... कथा कहें और उस प्रचलन में, किस चीज को उन्होंने अपने शुरूआत की...

- गाना / संगीत -

01.36 पप्पू राम भोपा : वो तो जैसे नौटल छोटे छोटे गाँव में होते हैं... जैसे रेबाड़ी लोग हैं, राजपूत हैं, जाट है... जैसे वो, हर साल भी इसको मानते हैं... हर साल, एक बार आपके घर पर बुला के, और मेरे को बुलाता है और रात भर इसको और फड़ / फढ़ बांची जाती है...

- गाना / संगीत -

01.58 रवि कान्त शर्मा : रावण हत्था, एक जो चार तार का इन्स्ट्रूमेंट है, वो बजाते हैं और उसमें भोपा और भोपी, मतलब आदमी और औरत, दोनों अपने देवताओं की कथाएं सुनाते हैं... और

इसी के साथ में, ना सिर्फ कथा सुनाने से काम चल नहीं सकता ... कथा तो सुनना है तो मतलब रात के, सूर्यास्त से सुबह की सूर्योदय तक कथा सुननी पड़ेगी आपको... जो कि आज के समय में, इस भागा दौड़ी के समय में प्रैक्टिकली पॉसिबल नहीं है... आज उसी रावण हत्था पर बड़ी मधुर स्वर लहरियाँ ये लोग गाते हैं... राजस्थान के लोक भजन, लोक गीत... मनोरंजन के साधन इनहोंने ने बनाये हैं... और लगभग पुष्कर में ही नहीं, पूरे राजस्थान में ये लोग पाये जाते हैं...

- संगीत -